Chapter- ३

साखी

STUDY NOTES

MIND MAP

कवि ने प्रेम की महिमा का मंडन किया है ।

ईश्वर का बास अन्तःकरण में है।

वाणी की मधुरता के महत्व का स्पष्टीकरण किया गया है।

ईश्वर का वियोग असह्य होता है
परमात्मा से विछुडकर सच्चे साधक का जीना सम्भव नहीं होता
यदि जीता भी है तो पागल हो जाता है ।

साखी
साखी का अर्थ है प्रत्यक्ष ग्यान अर्थात
सत्य की साक्षी देता गुरु,
शिष्य को जीवन के तत्व ग्यान की शिक्षा देता है ।

निंदक को पास रखने की महत्ता पर बल दिया है
बिना साबुन पानी के अपने स्वभाव को निर्मल बनाया जा सकता है ।

कबीर दास जी संसार के प्रति चिंचित है
संत संप्रदाय में शास्त्रीय ग्यान की अपेक्षा अनुभव ग्यान की विशेषता
ज्ञान का प्रकाश मोह के अन्धकार को मिटाता है ।

साखी पाठ प्रवेश

'साखी ' शब्द ' साक्षी ' शब्द का ही (तद्भव) बदला हुआ रूप है। साक्षी शब्द साक्ष्य से बना है। जिसका अर्थ होता है -प्रत्यक्ष ज्ञान अर्थात जो ज्ञान सबको स्पष्ट दिखाई दे। यह प्रत्यक्ष ज्ञान गुरु द्वारा शिष्य को प्रदान किया जाता है। संत (सज्जन) सम्प्रदाय (समाज) मैं अनुभव ज्ञान (व्यवाहरिक ज्ञान) का ही महत्व है -शास्त्रीय ज्ञान अर्थात वेद , पुराण इत्यादि का नहीं। कबीर का अनुभव क्षेत्र बहुत अधिक फैला हुआ था अर्थात कबीर जगह -जगह घूम कर प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करते थे। इसलिए उनके द्वारा रचित साखियों मे अवधि , राजस्थानी , भोजपुरी और पंजाबी भाषाओँ के शब्दों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। इसी कारण उनकी भाषा को 'पचमेल खिंचड़ी ' अर्थात अनेक भाषाओँ का मिश्रण कहा जाता है। कबीर की भाषा को सधुक्क्ड़ी भी कहा जाता है।

' साखी ' वस्तुतः (एक तरह का) दोहा छंद ही है जिसका लक्षण है 13 और 11 के विश्राम से 24 मात्रा अर्थात पहले व तीसरे चरण में 13 वर्ण व दूसरे व चौथे चरण में 11 वर्ण के मेल से 24 मात्राएँ। प्रस्तुत पाठ की साखियाँ प्रमाण हैं की सत्य को सामने रख कर ही गुरु शिष्य को जीवन के व्यावहारिक ज्ञान की शिक्षा देता है। यह शिक्षा जितनी अधिक प्रभावशाली होगी, उतनी ही अधिक याद रहेगी।

साखी पाठ सार

इन साखियों में कबीर ईश्वर प्रेम के महत्त्व को प्रस्तुत कर रहे हैं। पहली साखी में कबीर मीठी भाषा का प्रयोग करने की सलाह देते हैं ताकि दूसरों को सुख और और अपने तन को शीतलता प्राप्त हो। दूसरी साखी में कबीर ईश्वर को मंदिरों और तीर्थों में ढूंढ़ने के बजाये अपने मन में ढूंढ़ने की सलाह देते हैं। तीसरी साखी में कबीर ने अहंकार और ईश्वर को एक दूसरे से विपरीत (उल्टा) बताया है। चौथी साखी में कबीर कहते हैं कि प्रभु को पाने की आशा उनको संसार के लोगो से अलग करती है। पांचवी साखी में कबीर कहते हैं कि ईश्वर के वियोग में कोई व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता, अगर रहता भी है तो उसकी स्थिति पागलों जैसी हो जाती है। छठी साखी में कबीर निंदा करने वालों को हमारे स्वभाव परिवर्तन में मुख्य मानते हैं। सातवीं साखी में कबीर ईश्वर प्रेम के अक्षर को पढने वाले व्यक्ति को पंडित बताते हैं और अंतिम साखी में कबीर कहते हैं कि यदि ज्ञान प्राप्त करना है तो मोह - माया का त्याग करना पड़ेगा।